CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किवरिया, मै बंसी गृह देनेको आई ॥ बहुत दिननके उनींदे मोहन, सोनेदे वृषभानुकी जाई ॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन, अंतरयामी प्रभु कुँवर कन्हाई॥मुरलीके संग पहुँची हमारी, दे राधे वृषभानुकी जाई ॥ हम जानी कछु मान बढ़ेगो, तुम हरि हमको चोरी लगाई ॥ श्रवण न सुनी नयन नहीं देखी, चलो ठौर हम देहिं बताई॥ सूरदास गुण कहँलग बरणै, दोनोंमें एकसी चतुराई ॥

भजन।

मेरे माधो मैं तेरी गति जानी ना जानी ॥ सहस्र ऊनित पुण्य करत है सो गजा बड़ा दानी॥ मरती बेर कूरका किरला धीरज किसविध ठानी ॥ मारनकारन आई पूतना कुचपर विष लिपटानी ॥ उनकी गतिमति लखी श्यामने, तुरतबैकुंठपहुँचानी ॥ बड़े बड़े भूप राजकी क या उनपर योग दुरानी ॥ एक चेरी हुजे कंसकी मालन सो कौनी पटगनी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोरमुकुट माथे तिलक बिराजे कुंडलकी छबिलानी॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्णछबि चरनोंमें बलि जानी ॥

राग जंगला ।

कौन सुने प्रभु बात हमारी ॥ समरथ तुम बिन देखूं ना कोई, केहिसे कहूं यह व्यथा बनवारी ॥१॥ तुम अगणित अनाथके स्वामी, दीनदयालू कुंजविहारी ॥ २ ॥ सदा सहाय करो दासनपर, जिन उर धरी सोई प्रतिपारी ॥ ३ ॥ अबहूं शरण मैं आयो यदुपति, राखलियो भवत्रास निवारी ॥ ४ ॥ सूरदास चरननपर बलि बलि, कौन गुने तैं कृपा बिसारी ॥

राग सिंध ।

सभी मिल राम भजो नर नारी ॥
हरिके भजन बिन कैसे तरोगे, चौरासी लख भारी॥
ध्रुव प्रह्लाद पिता तज दीना, भरत तजी महतारी॥
हरिके भजनसे पतित तरगये, गनिका जैसी नारी॥
हरिके प्रभु गिरिधर नागर, चरनोंपर बलिहारी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करो हरिगिज न पाप ॥ जपो ईश्वरके जाप ॥
होवै दूर संताप ॥ सब दुख मिट जा सुखहो सदान॥
वाह वा वा वाह वा वान, करी निंदरा जो प्यारी०॥

भजन।

श्याम मेरा माखन क्यों खाया ॥
सूने घरमें चोरी करना किसने सिखलाया ॥टेक॥
गोरस बिखरा देखके मै सोचूं थी दिनरात ॥
थी मैं तेरी ताकमें तूं नहीं लगता था हाथ ॥
आजमैंनेतुझकोहैपाया श्याममेरामाखन क्योंखाया॥
श्या०॥१॥ मा बापोंका लाडिला तू बडे घरोंका पूत
दही चुरावत पकडलिया तेरी देखलई करतूत ॥
जरा नहीं मनमें शरमाया ॥ श्याम मेरा० ॥ २ ॥
करी तिरलोकी [illegible] तैं मुखमें भरलई छाछ ॥
[illegible] चलू ले कंसपै, मैं कहती सांची-साच ॥
फिरे तू किसका बहकाया ॥ श्याम मेरा० ॥ ३ ॥
इतनी सुनके श्यामने वाके मुखपर कुरली कीन॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोपीकी आंखें मिचीं, आँख मिचाई दीन ॥
दौड बदरी सो घर आया ॥ श्याम मेरा० ॥ ४ ॥

दोहा ।

गरब करेसे जात घट, सकल बडाई मान ॥
गरब किया रावण गया, नहिं रहा पता निशान॥१॥
करो कष्ट कुछ काम लो, पुरुसारथके हेत ॥
बदरी बरसे फेर क्या, सूख जाय जब खेत ॥ २ ॥

राग रामकली ।

हम ना किसीके कोई ना हमारा ॥ झूंठा है सब जगत व्यवहारा ॥ तनु संबंध सकल परिवारा ॥ सो तनु हमने जाना न्यारा ॥ १ ॥ पुण्य उदय सुखका बढवारा ॥ पाप उदय दुख होत अपारा॥ पाप पुण्य दोऊ संसारा ॥ मैं सब देखन जाननहारा ॥ २ ॥ मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला ॥ परसंयोग भयो बहु मेला ॥ स्तुति निंदा सब कर कर जाहीं ॥ मेरे हरष शोक कुछ नाहीं ॥३॥ राग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावते सज्जन मानो ॥ दोष भावते दुर्जन जानो ॥
राग द्वेष दोऊ मम नाहीं ॥ दया न तम चेतन पदमाहीं ॥ ४ ॥

कव्वाली ।

सखी उस श्यामने जाके कहीं बंसी बजाई है ॥
पड़ी धुन कानमें मेरे मुझे सोती जगाई है ॥
सुनी बंसी हुई हूं वस रही बसमें न मैं अपने ॥
किधर आऊं कहां जाऊं मुझे बावरी बनाई है ॥
तनकसी बांसकी पोरी गजब क्या कररही आली ॥
न जाने कौन बंशउपजी कहां किस बनसे आई है ॥
किया तप कौनसा ऐसा मुरलियाने लगी होठों ॥
अधररस ले रही पापिन श्यामने मुँह लगाई है ॥
बशर क्या चीज है जगमें मोहे सुर नर मुनी सारे ॥
करी तिरलोकी बस सारी धूम ऐसी मचाई है ॥
मैं बारंबार बलिहारी हूँ उस बांके बिहारीके ॥
नजर कर मेहरकी मुझपर सखी बंसी सुनाई है ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घुसी है तन बदन मेरे घोर मुरलीकी धुन प्यारी ॥
गई है फैल नसनसमें अजब बदरीसी छाई है ॥

कव्वाली ।

अरे नर तरनको तेरे धर्म बेड़ा बनाया है ॥ टेक ॥
धर्मका पवन है निकला अठारहही पुरानोंमें ।
धर्मका दाव है मीठा वेद चारोंने गया है ॥ १ ॥
शेषके शीसपर धरती धर्मके कारने अटकी ।
चढ़ा आसमानको ऊपर बिना खंभे टिकाया है ॥ २ ॥
धर्म कीना हरीचँदने दई विप्परको रजधानी ॥
आप बिकनेको काशीमें सहित कुनबेको आया है ३
जगतमें नाम है रोशन मोरध्वज धर्म नहिं हारा ॥
कि देकर हाथमें आरा कुँवरके शिर चलाया है ॥४॥
रहेगी धर्मकी चरचा जो कृपा रामकी होगी ।
जिन्होंने धर्म कीना है उन्हें बैकुंठ पाया है ॥ ५ ॥

राग जंगला ।

चले आते हैं मोहन बनसे धेनु चराए हुए ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घरको फूंकके तवाह कियावह अमिरसे होगयेफकरि
साधूका नहीं जौन धर्म मारे धातु करके तदवीर ॥
कहैं देवीसिंह हरेहरे कह यह जैसी हैगी अकसीर ॥
खाकसारकी जबांरसायन इसमें हैं हरएक तासीर ॥
जबांसैं वह मुरदेको जिलावे जबांसे देडाले जागीर॥
बनारसी यह कहे हमारी रामनाम हैग घूटी ॥
नारायण है सरजीवन भाई वह बूटी हमने० ॥ ४ ॥

प्रभाती ।

निर्धनके रामनाम प्रभु भगवतके बडे हितकारी ॥
दुर्बल रूप धरे सुदामा पूँछत है उनकी नारी ॥
हरिसमान जोमित्रतुह्मारो क्योंना हरिनेबिपताटारी ॥
तूत्रिया चतुरंग लाडकी कौन कुमत तेरी मति हारी ॥
कर्म हमारे लिखे दरिद्र क्या करे मुकुटाधारी ॥ २ ॥
सेतुबन्ध रामेश्वर परसे गौतमनारिशिला तारी ॥
छिनमें लंका फूंक दई है हनूमान आज्ञाकारी ॥३॥
पकड प्रहलाद खम्भसे बांधे भीडपडी भगतपरजी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फोड खंभ प्रगटे नारायण जीते असुर बलकारी ॥४॥
भारी दान दियो शिवशंकर भस्मासुर चाहे नारी ॥
तीन लोक शिवशंकर डोले जब नामिले हैं गिरिधारी
मोहिनीरूप धरे नारायण आन मिले मुकुटाधारी ॥
तुलसीदास आश रघुवर की पापकटे अति दुखभारी ॥

जिला।

रघुवर कौशल्याके लाल मुनिकी यज्ञ रचानेवाले ॥
पहुँचे जनकपुरी दरम्यान। तोडा सब राजनका मान ॥ उन्होंने नहीं किया अभिमान ॥ शिवके धनुष तोडनेवाले ॥ रघुवर० ॥ १ ॥ सीता ब्याही आई रनवास। माता केकई भई उदास ॥ दिया चौदा वर्ष वनवास। अहल्या नारी उधारनेवाले ॥ रघुवर० ॥ २ ॥ जा बांधा सिंधुका सेत। सुवरण लंका करदी खेत ॥ लंका भगत बिभीषण हेत। जड पर सिला तरावनवाले ॥ रघुवर० ॥ ३ ॥ बेडा आन पड़ा मझदार। तुम बिन कौन लगावे पार ॥ तुम तो होगे खेवनहार ॥ मेरी धीर धरनेवाले ॥ रघु० ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भजन।

धीरे चलोरी कुमार कुमार सिया प्यारी ॥ धीरे च०॥ देशदेशके भूपति बैठे करकरके अपना शृंगार शृंगार शृंगार ॥ सिया० ॥ १ ॥ जैमाला लीनी कर सोहे, राजा रहे सब निहार निहार निहार ॥ सिया० ॥२॥ चंद्रवदन चंचल मृगनैनी, शोभा है जिसकी अपार अपार अपार ॥ सिया० ॥ ३ ॥ नादिर छविको शेष न बरने, जिह्वा हैं जिसके हजार हजार हजार ॥ सिया प्यारी धीरे चलोरी कुमार० ॥ ४ ॥

भजन.

चलकरके देखो प्यारी जी एक गोपलली है ॥ सांवरी सलोनी रंग ढंग भली है॥ द्वारे खड़ी सस-कती नहीं कहती कुछ है॥ कुछ भेद नहीं खुलता विरहकी जली है ॥१॥ कुछ होश नहीं उसको बेहोश पड़ी है॥ पायल कहीं पड़ी है कहीं चंपकली है॥२॥ छबि देखनेमें उसकी श्रीकृष्णकीसी है ॥ सुंदर अ-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नृप रूप सांचेमें ढली है ॥ ३ ॥ चंपा सखी वह गोपी नाहीं मेरी जानमें ॥ नंदगामसे वह आई वह छैल छली है ॥ ४ ॥

राग एमन कल्याण ।

धीरे चलो तुम गोप लली री ॥ नूपुरधुन जो सुन पावेगा । घेरेगा फिर आय गली री ॥ १ ॥ उरझो बड़ा कठिनसों सुरझत । हम अबला वह पुरुष बली री ॥ २ ॥ नारायण नित दाँवघातमें । लगे रहत वह छैल छली री ॥ ३ ॥

देश ।

रघुवर तुमको मेरी लाज ॥ रघुवर तुमको० ॥ सदा सदा मैं शरण तिहारी, तुम बडे गरीब निवाज ॥ पतित उधारन बिरद तिहारो, श्रवणन सुनी अवाज ॥ हौं तो पतित पुरातन कहियो, पार उतारो जहाज ॥ अघ खंडन दुखभंजन जनके, यही तिहारो काज ॥ तुलसीदास पर कृपा जो करिये, भक्तिदान देओ आज ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग जिला।

जगके रूठेसे क्या हुआ जाके राम हैं रखवारे हो॥
चल देख प्यारे खंभमें नरसिंह हुये औतारे हो॥
हिरण्याक्षको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो॥
अब देख प्यारे सभामें जहां कपट पाँसे परे हो॥
द्रौपदीके चीर बडायके खैंचत दुशासन थके हो॥
चल देख प्यारे समरमें अक्षौहणियों दल जडे हो॥
बचे बच अदुलके गज घंट वापर पडे हो॥
चल देख प्यारे लंकमें संकट बिभीषण परे हो॥
तुलसी सराहें निज रामजीको रघुनाथ रक्षा करेहो॥

भजन।

इतना संदेशा मोरा ऊधो मोहनसे कहना॥
दर्शन बिन अखियां तरसें। आंसु छमाछम बरसें॥
फूलोंमें फूल चँबेली। नरगस खिली है अकेली॥
एसा गुलाब प्यारा। कांटोंमें खिल रहा न्यारा॥
जबसे हरि मथुरा पधारे रे तडफत प्राण हमारे॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरेबिन सब बिरज भई खाली सुनियोतूहो बनवारी ॥
गोपियोंकासंगशत्रुत्यागोकुरीके संग जालागारे ॥
तैंने कुलको लाज लगाई सुनियो तू हो जदुराई ॥
तेरा चंद्रसखी जस गावे रे राधा चरनोंपै बल जावै ॥
कब आवेंगे श्याम हमारे तरसत हैं नैन हमारे ॥

राग देश ।

प्रभु मोरे अवगुन चित्त ना धरो ॥
समदर्शी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥
इक नदिया इक नाले कहावत मैलोरी नीर भरो ॥
जब मिलकरके एक वर्ण भयो सुरसरि नाम परो ॥
इक लोहा पूजामें राख्यो इक गृह बधिक परो ॥
पारस गुण अवगुण नहीं चितवे कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो ॥
अबकी बेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो ॥

राग कालिंगडा ।

दयानिधि तेरी गत लखिना पडे ॥ टेक ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जपा बिभीषण राम लंकका राज दिया सारा ॥
लंका फूकी ठीक खाकमें रावन दे डारा ॥ १ ॥
जपा राम प्रहाद खंभ कर दिया लाल सारा ॥
गिरिवर परसे गेर दिया जल जमुनाकी धारा ॥ २ ॥
भाई बन्धु तेरा कुटुम कबीला सबही संसारा ॥
आवागवन रहा लाग जायगा दुनियाँसे न्यारा ॥३॥
धन और दौलत जोड़ जमीनमें गड़वाया सारा ॥
धरा ढका रह जावे लाद जाय टांडा बंजारा ॥ ४ ॥
जियारास स्वामी रघुनन्दन हरका मतवारा ॥
सिंहरूप नरसिंह उदर हिरनाकुशका फाड़ा ॥ ५ ॥

राग देश ।

नहीं ऐसा जनम बारंबार ॥ टेक ॥
क्या जानूं कछु पुन्य प्रगट भये मानुषलिया औतार॥
इत पल २ घटत छिन छिन चलत ना लागे बार ॥
वृक्षके जो पात टूटे लगें नहीं पुनि डार ॥
भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरतका नर बांध बेड़ा वेग उतरो पार ॥
साधू संत महंत जाके चलत करत पुकार ॥
दासी मीरा लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥

भजन ।

बोलो सीतारामसीतारामसीताराम ॥ बोलो राघोराम राघोराम राघोराम ॥ गौर बरन सिया जनकनंदिनी ॥ रघुबर हैं घनसुंदर श्याम ॥ बोलोरघुबर लछमन भरत शत्रुघन । जापर चंवर डुलावे हनुमान ॥ बोलो० ॥१॥ कीट मुकुट मकराकृत कुंडल कठिन धनुष कर सारंग पान । विश्वामित्रको यज्ञ सुफल कियो । गौतमनारी पठाई निजधाम ॥ बोलो० ॥२॥ सरजूकेतीर अयोध्या नगरी।जहां विचरत सिया लछमन राम ॥ बोलो० ॥३॥ तुम मन बिसर जाओ मेरे मनसे । तुमविन निकस जात मोरे प्रान ॥ तुलसीदास यह ध्यान धरत हैं । चौंसठ घड़ी भजो आठों जाम ॥ बोलो० ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग भैरवी ।

मन कहां लगा दियोरे–राम संग क्यों तोडी ॥
वहांसे आया भजन करनको कहां बुद्ध गई तोरी ॥
परत्रियासे नेह लगा दियो हरसे राखे चोरी ॥१॥
माया मोह जालका फंदा करता मेरी मेरी ॥
चेता जाय तो चेत बावरे यमने फांसी गेरी ॥२॥
गई जवानी आया बुढ़ापा कहां बुद्धि गई तेरी ॥
कहे कबीर सुनो भाई साधो निर्गुण माला फेरी ॥

लावणी ।

धनधन भोलानाथ बांटदियो तिन लोक एक पलभरमें । ऐसे दीन दयाळ शंभु कौड़ीभी रखी नहीं घरमें ॥ ॥टेक॥ प्रथम दिया ब्रह्माको वेद वह बना वेदका अधिकारी ॥ विष्णुको दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मीसी सुंदर नारी ॥ इन्द्रको दे दई कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी ॥ कुबेरको सारी वसुधा देकर किया तुमने भंडारी ॥ अपने पास पात्र नहीं राख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राखा तो खप्पर करमें ॥ १ ॥ अमृत तो देवताओंको दे दिया आपहलाहल पानकिया ॥ ब्रह्मज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुह्मारा ध्यान किया ॥ भगीरथको गंगा देदी सब जगने स्नान किया ॥ बड़े २ पापी-योंका तुमने पलभरमें कल्याण किया ॥ आप नशेमें रहो चूर और पीते भंग नित खप्परमें ॥२॥ रावण को देदी लंका और बीस भुजा दस शीश दिये ॥ राम चन्द्रका धनुषबान वह तुमने तो जगदीश दिये ॥ मनमोहन मोहनी देदी मोर मुगुट तुम ईश दिये ॥ मुक्तीहेत काशीमें वास भगतोंको विश्वेबीस दिये॥ अपने तनपर बसतर नहीं रखते मगन रहो वाघं-बरमें ॥ ३ ॥ नारदको दे देई बीन और गंधरवोंको रागदिया ॥ ब्राह्मणोंको दिया करमकांड तो संन्यासी को त्याग दिया ॥ जिसपर आपकी कृपा हुई है उन को तो अनुराग दिया ॥ देवीसिंह कहे बनारसीको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सबसे उत्तम भोग दिया ॥ जिसने पाया उसीने पाया महादेव तुम्हरे बनमें ॥ ४ ॥

भजन ।

मनमें धीरजको धारो, मित्रो भली करे करतार ॥ प्राण जायँ पर धर्म न छोंडो, सच्चे मित्रसे रिशता जोडो । कभी नहीं मुँह अपना मोड़ो, चाहे आफत होवें हजार ॥ १ ॥ राजपाट और माल खजाना, नहीं साथ तेरे कुछ जाना । अंतसमय कुछ काम न आना, है जितना परिवार ॥२॥ जिसने नहीं धर्मको टारा, उसने जगत जीत लिया सारा । निश्चय परभू देत सहारा, कभी न होवे हार ॥ मनमें० ॥३॥ कायर डरे और घबरावे, नहीं धर्म पै दुःख उठावे ॥ अन्द पदारथपर ललचावे, शर्मा करो विचार ॥४॥

भजन ।

जप ईश्वरको जप ईश्वरको, आलसने क्यों घेरा जिवडे ॥ जप० ॥ कहां गये चक्रवर्ती राजे, जिनके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बजे थे चहूं दिश बाजे ॥ लालका शिरपर बादल गाजे ॥ यह जग रैन बसेरा ॥ जप० ॥१॥ कीन्ही ना तैंने कोई भलाई, स्याही गई सफेदी आई ॥ वृद्ध भया बीती तरुणाई, पलपल होत अबेरा॥जप० ॥२॥ दिन गयासेवा करत पराई, सोसो सारी रात गँवाई ॥ मूर्ख तैनू मत ना आई, अब तू जाग सबेरा ॥जप०॥ ॥ ३ ॥ सुनो सुनो मित्र प्यारे लालो, ईश्वरकी तुम आज्ञा पालो ॥ सतविद्याका दीपक जालो, आगे बहुत अंधेरा ॥ जप० ॥ ४ ॥ बाग लगाये बनाये बंगले, शीशे लगाए रँगाये जंगले ॥ कौन चलेगा इनको संगले, अंतको मरघट डेरा ॥ जप०॥ ५ ॥ करदे दिल तैं दूर जहालत, उथे नहीं कोई करता वकालत ॥ सच्चे साहबकी सच्ची अदालत, अमली होवे नबेड़ा ॥ जप० ॥ ६ ॥ सिध सनकादिक दश औतारी, अमीर बडे २ मायाधारी ॥ विक्रम भोज द-धीचसे भारी, करगये जोगीदा फेरा ॥ जप० ॥ ७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस गाडीमें जाना तुमको, एक पल छिनमें अब आती है ॥ कुछ देर नहीं बांधो बिस्तर, घंटी उपदेश सुनाती है ॥ करे शंट और अंजन गरजे है सुनसुन जिया थरथर लरजे है ॥ कर तरक बतन उस देस चले, जिससे आती नहीं पाती है ॥ एक उतरी आन सवारी है, एक चलनेकी कर रही तयारी है ॥ दुनीयां एक अजब स्टेशन है, जहां रेल चले दिनराती है ॥ जिस जिस दरजेमें जाना है, वैसा महसूल चुकाना है ॥ यहां टिकटही देखे जाते हैं, नहीं पूंछते कौनसी जाती है ॥ यहां घूमते चोर उचक्के हैं, जो दावघातके पक्के हैं ॥ कोई गांठ कतर ले जाता है, कोई करता आतम घाती है ॥ जब होती रेल रवाने है तब छूटत देश बेगाने हैं ॥ रोरोके पीछे देखे हैं, गाडीसे पाकर जाती है ॥ जो ताज और तखतका बाली है तब अब जाताहाथसे खाली है ॥ जो कुन्बेका अभिमानी है, अबसंगना उसके साथी हैं ॥ कहो क्या लाया संग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तू तोशा है, तेरा जिसपर इतना भरोसा है ॥ खान पानका संग समान नहीं, लगी भूँख और प्यास सताती है ॥ यदि कितनाही धन जोडेगा, उसे अंत-को एक दिन छोडेगा ॥ संग धर्मकी बिलटी जायेगी और वस्तु संग नहीं जाती है ॥ क्यों लंबा पांव पसारा है, चंदमिनटका यहां तो गुजारा है॥क्यों लडे है साथ मुसाफरके, तू अमीचंद बडा उतपातो है॥

राग पूर्वी ।

बगियामें चलोगी कि ना प्यारी, मैं तो तिहारी मलि-नयां ॥ केसर फूली क्यारी झुकी गुलाब डारी चंपा चंबेलीकी खूब खुशबोई ॥ १ ॥ बगियामें चलोगी०॥ चंपा चंपा बेला बेला दोनां दोनां मरुवा मरुवा खुशबोई बल्हार बल्हार ॥ २ ॥ बगियामें चलोगी०॥ प्यारी कहामान कहामान कहामान बगिया०॥अरजी यह हमारी सुन भानकी दुलारी श्याम सखी जाय बल्हार बल्हार बल्हार ॥ ३ ॥ बगियामें चलोगी० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान कमानी खैंच ध्यानकी संकल डाली है ॥३॥
मुँहकी लाठबनी है भारी. श्वास धुवां जिसमें है जारी।
दिलका अंजन लगा जहां झट अभी बाली है ३
बजकाघंटाहरदमहिलता, बखतरेलकाजिससेमिलता
हाथका सिगनल हिला रेल अब आनेवाली है ४
जीवमुसाफिरमतदुखखेवे, रामनामक्योंटिकटनलेवे।
कफकी घंटी बजी कूच अब करनेवाली है ॥ ५ ॥
तारखबर अब हिचकी आई,कालनदरियाशिरपरछाई।
भँवर रेल गई छूट रहा ईस्टेशन खाली है ॥
यह कायाकी रेल रेलसे अजब निराली है ॥ ६ ॥

भजन ।

क्यों हरिनाम बिसारोरे नर क्यों हरिनाम बिसारोरे।
ऐसा जन्म फेर नहिं पावे बाजी जीतके हारोरे ।
लख चौरासी भुगतके आया अब तू भज करतारोरे
सच्चा साहिब है घटमाहीं खोलके देख किंवारोरे ॥
जोती झलके अनहद गरजे गंगाकी बहै धारोरे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर असनान यही गंगामें जो होवे निसतारा रे ॥
झूँठा जगत देख कर मोहा मनमें कुछ न विचारा रे ।
घासीराम अब खोलो अखियां देखो टुक दीदार रे ॥

भजन ।

तेरे तारे हरी निरंजन कौन कौन तारे ॥
मथुरामें तो जन्म लीन्हा गोकुला सिधारे ।
कंसका निरवंश कीन्हा संतके तुम प्यारे ॥
तैंदवेको बल जो दीन्हां सेरावत हारे ।
हारके पुकार कीन्ही बाहुड बन्सीवारे ॥
प्रहलाद सुदामा तारे पढ़ते इक चटसारे ।
नरसी भगतकी हुंडी तारी छिनमें लिये उभारे ॥
द्रौपदीके चीर बढ़ाये करोडों कीन्हे भारे ।
सूरदास बाहर ठाढ़े हैं कर बेड़ेको पारे ॥

भजन सोरठा ।

जिनकी लगन रामसों नाहीं ।
वे नर खर सूकर कूकर सम वृथा जिवत जगमाहीं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्यारे भयो बड़े कुलमें उपजो शील नहीं घटमाहीं
अमृत छोड़ विषयरस पीवत धिक् २ उनके ताहीं॥
जैसे फूल आषाढ़में फूलै विन स्वारथ झड़ जाहीं॥
भवसागर बिच बहा जातहूं को राखे खैंच बाहीं॥
कड़वी बेलकी कड़वी तुंबड़िया सब तीरथ कर आई॥
श्रीजगन्नाथके दर्शन करके तो भी ना गई कड़वाई॥

भजन ।

माया काहूकी न भई रे माया काहूकी न भई रे॥
सतयुगमें हिरनाकुश राजा चारों जीत लई रे॥
हाथमें खड़ग महाबल जोधा उनके संग ना गई रे॥
त्रेतामें रावण भये राजा लंकाराज सही रे॥
एक लख पूत सवालख नाती लकडी किसी ना दई रे॥
द्वापर दुर्योधन भयो राजा पांडूराज सही रे॥
बारह योजन छत्तर झूलत देही सँग न गई रे॥
द्वापर अंत कृष्ण भये राजा कंसको राज सही रे॥
कंसको मार उडन्त कियो प्रभु गोपी व्याकुल भई रे॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों जुग सही रे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो मेरी मेरी कही रे॥

भजन ।

जो जन ऊधो मोहि ना बिसारे ।
मैं ना बिसारूं छिन एक घड़ी रे ॥
जो मोहि भजै भजूं मैं वाको, सुख राखूं आनन्दघड़ी रे
जन्म जन्मके फंदे काटूं, दे डारूं वैकुंठपुरी रे ॥
दुर्वासा अंबरीष घर आये, चक्रसुदर्शन रक्षाकरी रे॥
भारतमें भँवरीके अंडे, राख लिये गजघंट धरी रे॥
ध्रुव प्रहलाद रैनदिन ध्याये, गुप्त हुए तैं प्रगट करी रे॥
भरी सभामें द्रुपदसुताको, चीर दिये जगदीश रही रे॥
खंभफोड़हिरनाकुश मार्‌यो, भक्तप्रहलादकीरक्षाकरीरे॥
सूरदास गजराजउबार्‌यो, जगन्नाथ जगदीशहरी रे॥

भजन ।

हमभगतनकेभगतहमारे, हम भगतनके भगतहमारे॥
सुन अर्जुन परतिज्ञामेरी, यह ब्रत होत टरत नहिं टारे॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गजल ।

बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है ॥
हमारी मातकी करनी सकल दुनियांसे न्यारी है ॥
बेमुखडा रामसों कीनों यही जननी हमारी है ॥
लगी रघुवंशमें अग्नी अबध सारी उजारी है ॥
भरतजी लोटैं धरनी पैं कर्तानें क्या बिचारी है ॥
नहीं मैं राजका भूँखा फजर चलनेकी त्यारी है ॥
सुना एक तातका मरना जिगर बर्छीसी मारी है ॥
पड़ा व्याकुल हुआ बेसुध नैनोंसे नीर जारी है ॥
पड़ो सियारामके चरनन यही तुलसी बिचारी है ॥

राग देश ।

राधेकृष्ण क्यों नहीं जपते पीछे पछताओगे ॥
जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लिये ॥
यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥
तिरिया अरु कुटुंबके खातर पच पचके कमाओगे ॥
माया तेरे सँग ना चालै भरम गमाओगे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आवैंगे वे यमके दूत पकड ले जावेंगे ॥
तुमसे मागेंगे हिसाब प्यारे क्या बतलाओगे ॥
सूर प्रभु शरण आयो आवागमन मिटाओगे ॥
श्रीठाकुरको ध्यान धरले पार लँघ जाओगे ॥

राग देश ।

नाथकैसेगजकेफंदछुडाये हँसपूँछैजनकपुरकीनारी ॥
तिहारो यही अचरज मनभाए॥ नाथ कैसे गजके० ॥
गज और ग्राह लडे जलभीतर दारुन रुदण मचाए॥
गजकीटेर सुनी रघुनन्दन गरुड छोड उठ धाए ॥१॥
भीलनीके बेर सुदामाके तन्दुल रुचरुच भोग लगाये॥
दुर्योधनकी मेवा त्यागी साग विदुर घर पाए ॥ २ ॥
इन्द्रने कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें वारि बहाये ॥
गोवर्द्धन स्वामी नखपर लीनो इन्द्रको मान घटाये॥३॥
अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो महाभारत गुण गाये ॥
भारतमें भँवरीके अंडा घंटा तोड बचाये ॥ ४ ॥
ले प्रल्हाद खंभसे बाँध्यो राजन त्रास दिखाये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंहरूप बनाए ॥ ५ ॥
छोडे न छुटे सियाजीको कंगना कैसे चाप चढ़ाए ॥
कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहीं लुभाए॥६
जहां जहां भीड़ पड़ी संतनपै तहां तहां होत सहाये ॥

राग खम्माच ।

हरी हम पाप कियो भारी, तुम्हारा नाम पापहारी ॥
बड़ोमैंपतितनमें नामी, कुटिल जगनिन्दकशठगामी॥
बडो मैं दुष्टनमे राजा, करों नित उदरहेत काजा ॥
दो०—सात द्वीप नौ खंडमें, अतिनीचनमें नीच ॥
विषयकीचमें धस रह्यो, भवसागरके बीच ॥
लगा चित परधन परनारी ॥ १ ॥ हरी हम पाप०॥
किये सब झूँठे ब्यौहारा, कि पाले कुल कुटुंब दारा ॥
कहायो कुशल कर्म दानी, महामूरख मैं अज्ञानी ॥
दो०—एक घडी ना चेतियो, लियो न तेरो नाम ॥
निन्दा चरचा कर दिन बीत्यो, बीते आठों जाम ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहा धन जोबन हंकारी ॥ २ ॥ हरी हम पाप० ॥
अजामिल पाप बहुत कीने, कामिनी कामरंग भीने॥
कीनो नितउलटासँगबासा, कियोनितधर्मकर्मनाशा
दो०-हिरनाकुश प्रहलादके, मरनहेत कियो काज ॥
खंभ फोड प्रभु नरसिंह प्रगटे, राखी जनकी लाज ॥
भगतकी पीर हरी सारी ॥ ३ ॥ हरी हम पाप० ॥
प्रभु तुम कुंजरपति राखी, तुम्हारा नाम जभी भाखी॥
द्रौपदीकी लाज तुम राखी, चीरसों नम नहिं राखी॥
दो०-इंदर कोपकियो बृजऊपर, बरसो पत्थरसार ॥
सारे बृजको राखलियो प्रभु, नखपर गिरिवर धार ॥
नाम तेरो पडयो है गिरिधारी ॥ हरी० ॥ ४ ॥
सोईनर नरककुंड पडते, जोई तेरी भक्ति नहीं करते॥
सोईनर खरसूकरमाना,जिन्होंनेतेरा नामनहींजाना ॥
दो०-रातदिना अन्ध घोरमें, पडे रहत अज्ञात ॥
मान लोभ मद मोहमें, तेरो जन्म अकारथ जात ॥
पापकी करमरेख न्यारी ॥ ५ ॥ हरी हम पाप० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राग भैरवी।

राम जप राम जप राम जप बावरे ॥
घोर भवनीर निधि नाम निज नावरे ॥
एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साधरे ॥
असे कलि रोग योग संयम समाधिरे ॥
भलो जो है पोच जोहै दाहिनो जो बामरे ॥
राम नामहीसे अंत सबहीको कामरे ॥
जगनभ बाटिका रही है फैल फूलरे ॥
धुआं कैसे धौल है तू देख मत भूलरे ॥
राम नाम छोड़ भोसो करे तू और रे ॥
तुलसी परोसौ त्याग मांगे कूर कौर रे ॥

राग भूपाली दादरा।

विश्वपतिके ध्यानमें जिसने लगाई हो लगन ॥
क्यों न हो उसको शांति क्यों न हो उसको मन मगन
काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली ॥
इनके हननके वास्ते जितना हो तुझसे नरयतन ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐसा बना सुभावको चित्तकी शानीसे तू ॥
पैदा न ईर्षाकी आंच दिलमें करे कहीं जलन ॥
मित्रता सबसे मनमें रख त्यागके बैरभावको ॥
छोडदे टेढ़ी चालको ठीक कर अपना तू चलन ॥
जिससे अधिकन है कोई जिसने रचा है यह जगत ॥
उसकाही रख तू आसरा उसकी तू पकड़ शरन ॥
छोडके राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ॥
तुझपै दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन ॥
जैसा किसीका हो अलम वैसाही पाता है वह फल ॥
दुष्टोंको कष्ट मिलता है श्रेष्ठोंका होता दुख हरन ॥
आप दयास्वरूप हैं आपहीका है आसरा ॥
कृपादृष्टि कीजिये मुझपै हो वक्त जब कठिन ॥
मुनमें हो मेरे चांदना मोक्षका रस्ता मिले ॥
मारके मन जो केवला इन्द्रियोंको करे दमन ॥

दमन ।

मत भूले रामका नाम जपाकर ईश्वरकी माला ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक भगवानभरोसे तनमनधन क्योंना छोड़दिया ॥

राग कान्हड़ा।

राखो लाज हरी तुम मेरी राखो लाज हरी ॥
तुम जानत सब अंतर्यामी करनी कुछ ना करी ॥
औगुन मोसे विसरत नाहीं पल छिन घड़ी घड़ी ॥
सब प्रपंचकी पोट बांधकर अपने सीस धरी ॥
सुत दारा हित मोह लियो है सुध बुध सब बिसरी ॥
सूर पतितको बेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥

राग ठुमरी।

अरे मन समझ समझ पग धरिये ॥
इस जगमें अपना ना कोई परछायेसे डरिये ॥
दौलत दुनियां कुटुंब कबीला इनसों नेह न करिये ॥
रामनाम सुखधाम जगत्पति सुमर वेग जासों तरिये ॥

गजल।

सबसुख रामनाम लौलाये नाम बिना सुख सकल वृथा ये। ना सुख होता मूँड मुँड़ाए, नासुख घर २ अलख जगाये ॥ ना सुख है अपने घरमाहीं, नासुख भगवा भेष बनाये ॥ ना सुख बनमें ना सुख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनमें, ना सुख चिन्ता ना हर्षाये ॥ ना सुख जोग यज्ञ तप पूजा, नासुख झूँठी समाधि लगाये ॥ ना सुख राजा ना सुख रानी, ना सुख हासविलास कहानी । ना सुखमानी ना अभिमानी, ना सुख झूँठी कर चतुराई ॥ ना सुख वेदकिताबपुराना, ना सुख हरी कथा और ज्ञाना ॥ सारे सुख कबिराने पाये, रामनाम जिन मनमें बसाये ॥

राग टोडी ।

राम सुमर राम सुमर यही तेरो काज है ॥ मायाको संग त्याग, प्रभुजीकी शरण लाग ॥ जगत सुख मान मिथ्या, झूँठो सब साज है ॥१॥ सुपने ज्यों धन पिछान, काहे पर करत मान ॥ बालूकी भीत जैसे, वसुधाको राज है ॥ २ ॥ नानक जन कहत बात, विनशि जाय तेरो गात ॥ छिन छिन कर गयो काल, तैसे जात आज है ॥३॥

राग आसावरी ।

सुमर २ हरिनामरे, गाफिलवृथातेरीउमरगुजरगई ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जबलगथामूढसमझनहीं आईबालअवस्थायूंहीगबाँई।
खेलतही तेरी शामसुबहगई,भूल गयो निजकामरे ॥
पुनिजोबनविषयोंनेघेरा,छायाहूआजिनकातुझपैअंधे
रा॥मसतीमें कहता तूं मेरा २, नाजपामुखसेरामरे ॥
इश्क भरी तेरी दृष्टि जिधरगई, सुमरसुमरहरिनामरे ॥
करतानजाराफँसामोहमें कैदी, मिटगई स्याही और
आगई सफेदी॥अबतो हुई मूढयहनाउमेदी, तजलों
भमोहक्रोधकामरे ॥ अहंकारमेंतेरीनाहककदरगई,
सुमरसुमरहरिनामरे ॥ कदरहैउनकीजोनामकेरंगमें
भीगेहैं निसदिन सतसंगमें। प्रेम रचा जिनके अंग
अंगमें पावैंगे वैकुंठधामरे ॥ गंगाविष्णुतेरीसुधहु
विसर गई सुमरसुमर हरिनामरे ॥

भजन।

पी ले रे अबुधहोमतवाला प्याला प्रेमहरी रसकारे॥
बालापन लडकनमें खोया, ज्वानभयानारीबसकारे॥
वृद्ध भया कफवायुनेघेरा, खाटपडानाजा खसकारे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पापपुण्यदो भुगतन आया, कौनतेरातू है किसकारे॥
जोदमजीवैहरिगुणगाले, धनजोबनसुपनानिसकारे॥
नाभिकमलमें है कस्तूरी, कैसे भरम मिटे पशुकारे॥
बिन सतगुरुनर ऐसा डोले, जैसे मिरग फिरेबनकारे॥
लख चौरासी बचनाचाहे, छोड कामनीका चसकारे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, इस जगमें कोई ना अपनारे॥

भजन।

कर सुमरन मन रामनाम, दिन नीके बीते जाते हैं॥
जैसा लागे मीठा बतासा, मूरख फँसा मोहकी फांसा॥
क्या राखेंसांसोंकी आसा, गये लौटनहीं आते हैं॥ क०
पुत्रकलत्रसकलपरिवार, किसकेतुमहोकौनतुह्मारा॥
जिसके बलहरीनामबिसारा, सबसुखदेखनकेनाते हैं॥
लख चौरासी भोग गवाँयो, बडे भाग मानुषतनपायो॥
बालापनहँसखेलगँवायो, अबसमझसोचपछतातेहैं॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भजन ।

लक्षमन सीता कौन हरी ॥ लछमन सीता० ॥
गिरपर चढ़कर सागर देखा कहीं चल भरने गई ॥१॥
उड़ २ कागा मढ़ीपर बैठें कुटिया सूनीरे पडी ॥ २ ॥
क्या हरलेगया लंकापतिरावण नहींतो सिंह भषी॥३॥
तुलशीदास आशा रघुवरकी बनमें बिपत पडी ॥४॥

भजन ।

चलो गोकुलमें नन्दके यहां लाल हुआ ॥
यदुवंशके कुलका उजाला हुआ ॥ टेक ॥
सखी व्रजकी सब बाल । होके दिलमें खुशहाल॥
बैयां गरदनमें डाल । नाचें देदेके ताल ॥
आज नंदका नसीवा प्यारीआलाहुआ॥चलो०॥१॥
सभी हिलमिलके ग्वाल । करें जै जै गोपाल ॥
बाजें संख और घडयाल । जन्म लीनो नन्दलाल ॥
झूलें अँगनामें पलना जहां डाला हुआ ॥चलो०॥२॥
आज व्रजमें महाराज । करन भक्तोंके काज ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जोडा सारा समाज । कसे दर्शन चल आज ॥
सुख नैनोंका पहुँचानेवाला हुआ ॥ चलो० ॥३॥
देखो गोकुलकी ओर । सावन भादोंकी शोर ॥
बोलें पंछी बन मोर । मानों बदरीकी घोर ॥
बूंदें आनंदकी बरसानेवाला हुआ ॥ चलो० ॥ ४ ॥

धेटर तरज ।

छुडाओरे अब का मेरी जात बिहारी ।
पछताए गमखाना सुझाना कुमलानर हेरी हेरी ॥
जय बंसीधर श्यामसुरारी जय नखपरगिरिवरधारी ॥
भरी सभामें द्रुपदी पुकारी बिगत पडी मोहे भारी ॥
दुष्ट दुशासननमकरतहै खसखसालीनीमोरीगिरिधारी।
विपतनिवारण नाव तिहारे कहां गये अनमुरारी ॥
द्वारवतीमें टेर सुनी है खेलत गिरिधारी ॥
अनंद बोल पाँसे डार दिये दैनहयो चीरना अंतभारी ॥
जय जय जै हरि चीर बढ़ाये रंगरंगके खिल आये॥
कहीं केशरी कहीं सबज़ है श्यामके मन भाये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh